राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
बिहार लोक भवन, पटना–800022

प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या–175/2026

भारत–पाक संबंधों में आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख के साथ दीर्घकालिक संवाद जरूरी – टी०सी०ए० राघवन

- 'पाटलिपुत्र प्रज्ञा प्रवाह' के पहले व्याख्यान में मक्का समझौते और बदलते क्षेत्रीय समीकरणों पर हुई चर्चा
- दक्षिण एशिया की बदलती परिस्थितियों के बीच भारत को व्यावहारिक और संतुलित रणनीति अपनाने की जरूरत

पटना 31 अगस्त, 2026 :– प्रख्यात राजनयिक, विद्वान और लेखक श्री टी०सी०ए० राघवन ने कहा कि दक्षिण एशिया में तेजी से बदलती परिस्थितियों को देखते हुए भारत को भावनाओं के बजाय व्यावहारिक और संतुलित सोच के साथ दीर्घकालिक रणनीति बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की ओर से होने वाले आतंकवादी उकसावों के खिलाफ भारत को अपना सख्त रुख बनाए रखना चाहिए, लेकिन लंबे समय में पड़ोसी देशों के साथ संवाद और संपर्क की जरूरत को भी ध्यान में रखना होगा।

श्री राघवन बिहार लोक भवन में 'पाटलिपुत्र प्रज्ञा प्रवाह' श्रृंखला के पहले व्याख्यान में "मक्का समझौता, पाकिस्तान और भारत–पाकिस्तान संबंधों का भविष्य" विषय पर बोल रहे थे।

उन्होंने मक्का समझौते के संदर्भ में पाकिस्तान, तुर्किये और सऊदी अरब के बीच बढ़ते सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की परमाणु और रक्षा क्षमता, सऊदी अरब के आर्थिक संसाधन तथा तुर्किये की आधुनिक तकनीक और क्षमता मिलकर मध्य–पूर्व के साथ–साथ दक्षिण एशिया में भी नए अवसर और नई चुनौतियाँ पैदा कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि ये तीनों देश अमेरिका के साथ अपने संबंध बनाए हुए हैं, लेकिन इस पूरे समीकरण में चीन की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार, मक्का समझौता क्षेत्र में एक अधिक स्वतंत्र और मजबूत सुरक्षा व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

श्री राघवन ने कहा कि विदेश नीति में हर स्थिति को जीत या हार के नजरिए से नहीं देखा जा सकता। अलग–अलग देश अपने हितों के अनुसार एक साथ कई देशों के साथ संबंध रख सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि युद्ध का स्वरूप तेजी से बदल रहा है और आधुनिक तकनीक के कारण शक्तिशाली और कम शक्तिशाली देशों के बीच अंतर धीरे–धीरे कम हो रहा है।

आगे पृष्ठ 2 पर.....

इससे पहले 'पाटलिपुत्र प्रज्ञा प्रवाह' की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सय्यद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) ने कहा कि बिहार प्राचीन समय से ही ज्ञान, चिंतन, तर्क और विचारों के आदान–प्रदान का प्रमुख केंद्र रहा है। इस परंपरा को फिर से मजबूत करने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि बिहार लोक भवन आगे भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान और संगोष्ठियाँ आयोजित कर विचार–विमर्श की संस्कृति को बढ़ावा देगा। ऐसे कार्यक्रमों को राज्य के विभिन्न हिस्सों तक ले जाने की जरूरत है, ताकि ज्ञान और नए विचार अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सकें।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने बताया कि बिहार लोक भवन में ऐसे कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएँगे और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ इन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण विषयों पर संवाद करेंगे। उन्होंने विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की अपील की, ताकि विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों के बीच विचार–विमर्श की संस्कृति को बढ़ावा मिले।

चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ० फैजान मुस्तफा ने सत्र का संचालन किया और ऐसे व्याख्यानों की श्रृंखला शुरू करने के लिए बिहार लोक भवन की पहल की सराहना की।

व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान विभिन्न लोगों ने विषय से जुड़े सवाल पूछे और श्री टी०सी०ए० राघवन ने उनके जवाब दिए।

इस अवसर पर राज्य सरकार और सेना के वरिष्ठ पदाधिकारी, राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

.....